ज्यों जानो त्यों रखो

ज्यों जानो त्यों रखो, धनी तुमारी मैं।
ए केहेने को भी न कछु, कहा कहूं तुमसे।।

कछू कछू दिल में उपजत,सो भी तुमहीं उपजावत।
दिल बाहेर भीतर अंतर, सब तुमहीं हक जानत।।

धनी मेरा अर्स का, मैं तुमारी अरधंग।
भेख बदल सुनाए वचन,दीया दीदार बदल के अंग।।

जानो तो राजी रखो, जानो तो दलगीर।
या पाक करो हादीपना, या बैठाओ मांहे तकसीर।।

महामत कहे मैं हक की, खोले मगज मुसाफ कलाम।
और हक कलाम कौन खोल सके, जो मिले चौदे तबक तमाम।।